ईजानाः स्वर्गं यान्ति लोकम्। -अथर्व.-18.9.2 यज्ञ करने वाले सुखमय लोक को पाते है।

इदं हवियर्तुधानान् नदी फैनमिवावहत्।।

-अथर्व. 1.8.2

यज्ञ मे होमी गई हवि
रोग एवं प्रदूषण रूपी
यातुधानों (सूक्ष्म रोगजनक जीवों)
को
वैसे ही विनष्ट कर देती है,
जैसे नदी झागों को।

नित्य यज्ञाग्नि का आधान जहां।
धरती का है स्वर्ग वहां।।